doubtnut
India's Number 1 Education App

HINDI

BOOKS - X BOARDS

HINDI (COURSE A) 2017

Outside Delhi Set I खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - लोकतन्त्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते है कि सब

कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव - शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोग बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महानतम बनाते है उससे रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे है। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ - सफाई की बाटे हो, जहाँ - तहाँ हम लोगों को गन्दगी फैलते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलते देख सकते है। फिर चाहते है कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किये है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ

खोली है, विशाल बाँध बनवाए है, फौलाद के द्वारा हुए है। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ - बूझ के साथ अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन - सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गावँ वाले बड़ी - बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गावँ में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते है।

लोकतन्त्र का मूलभूत तत्व है -

A. कर्तव्य - पालन

B. लोगों का राज्य

C. चुनाव

D. जनमत

Answer: A

Watch Video Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - लोकतन्त्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते है कि सब

कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव - शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोग बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महानतम बनाते है उससे रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे है। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ - सफाई की बाटे हो, जहाँ - तहाँ हम लोगों को गन्दगी फैलते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलते देख सकते है। फिर चाहते है कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किये है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ

खोली है, विशाल बाँध बनवाए है, फौलाद के द्वारा हुए है। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ - बूझ के साथ अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन - सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गावँ वाले बड़ी - बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गावँ में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते है।

किसी देश की महानता निर्भर करती है -

A. वहाँ की सरकार पर

B. वहाँ के निवासियों पर

C. वहाँ के इतिहास पर

D. वहाँ की पूँजी पर

Answer: B

Watch Video Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - लोकतन्त्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते है कि सब

कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव - शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोग बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महँ बनाते है उससे रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे है। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ - सफाई की बाटे हो, जहाँ - तहाँ हम लोगों को गन्दगी फैलते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलते देख सकते है। फिर चाहते है कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किये है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ

खोली है, विशाल बाँध बनवाए है, फौलाद के कारखाने खोले है। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ - बूझ के साथ अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन - सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गावँ वाले बड़ी - बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गावँ में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते है।

सरकार के कामों के बारे में कौन - सा कथन सही नहीं है ?

A. वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ बनवाई है

B. विशाल बाँध बनवाए है

C. वाहन - चालकों को सुधारा है

D. फौलाद के कारखाने खोले है

Answer: C

Watch Video Solution

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - लोकतन्त्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते है कि सब

कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव - शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोग बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महँ बनाते है उससे रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे है। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ - सफाई की बाटे हो, जहाँ - तहाँ हम लोगों को गन्दगी फैलते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलते देख सकते है। फिर चाहते है कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किये है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ

खोली है, विशाल बाँध बनवाए है, फौलाद के द्वारा हुए है। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ - बूझ के साथ अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन - सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गावँ वाले बड़ी - बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गावँ में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते है।

सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है ?

A. गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना

B. योजनाएँ ठीक से न बनाना

C. आधुनिक जानकारी का अभाव

D. जमीन से जुड़ी समस्याओं की ओर ध्यान न देना

Answer: A

View Text Solution

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - लोकतन्त्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते है कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव - शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोग बनाने के बदले आज बोझरूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महँ बनाते है उससे रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे है। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ - सफाई की बाटे हो, जहाँ -

तहाँ हम लोगों को गन्दगी फैलते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलते देख सकते है। फिर चाहते है कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे। सरकार ने बहुत सारे कार्य किये है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली है, विशाल बाँध बनवाए है, फौलाद के द्वारा हुए है। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ - बूझ के साथ अपनी आन्तरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन - सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरू कर दें। और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गावँ वाले बड़ी - बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गावँ में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ पुल की

आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते है।

"झकझोर कर जागृत करना" का भाव गघांश के अनुसार होगा -

A. नींद से जगाना

B. सोने न देना

C. जिम्मेदारी निभाना

D. जिम्मेदारियों के प्रति सचेत करना

Answer: D

Watch Video Solution

6. निम्नलिखित गघांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - हरियाणा के पुरातत्व - विभव द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी इ सा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। अब तक यही मन जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिन्धुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गावँ में खुदाई और शोध का काम रुक - रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गावँ दिल्ली से मात्र एक सौ पचास

किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मन गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थी कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा। अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत है कि राखीगढ़ी, भारत - पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें मीटर चौड़ी थी। यह चौड़ाई कालीबंगन की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिन्ह मिले है, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके आलावा टैराकोटा

से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक भट्ठी के अवशेष भी मिले है। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फण्ड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत - स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया है, जो अवशेष मिले है, उनका समुचित अध्ययन सभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

अब सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर किसे मानने की सम्भावनाएँ है ?

A. मोहनजोदड़ो

B. राखीगढ़ी

C. हड़प्पा

D. कालीबंगा

Answer: B

Watch Video Solution

7. निम्नलिखित गघांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - हरियाणा के पुरातत्व - विभव द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी इ सा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो

तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। अब तक यही मन जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिन्धुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गावँ में खुदाई और शोध का काम रुक - रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गावँ दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मन गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थी कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा। अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत है कि राखीगढ़ी, भारत - पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे

बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें मीटर चौड़ी थी। यह चौड़ाई कालीबंगन की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिन्ह मिले है, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके आलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक भट्ठी के अवशेष भी मिले है। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फण्ड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत - स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया है, जो अवशेष मिले है, उनका समुचित अध्ययन सभी शेष है।

उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

चौड़ी सड़कों से स्पष्ट होता है कि -

A. यातायात के साधन थे

B. अधिक आबादी थी

C. शहर नियोजित था

D. बड़ा शहर था

Answer: C

Watch Video Solution

8. निम्नलिखित गघांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - हरियाणा के पुरातत्व - विभव द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी इ सा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। अब तक यही मन जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिन्धुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गावँ में खुदाई और शोध का काम रुक - रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गावँ दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई

हुई थी और तब इसे सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मन गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थी कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा। अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत है कि राखीगढ़ी, भारत - पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें मीटर चौड़ी थी। यह चौड़ाई कालीबंगन की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिन्ह मिले है, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके आलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ

और एक भट्ठी के अवशेष भी मिले है। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फण्ड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत - स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया है, जो अवशेष मिले है, उनका समुचित अध्ययन सभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

इसे एशिया के 'विरासत - स्थलों' में स्थान मिला, क्योंकि -

A. नष्ट हो जाने का खतरा है

B. सबसे विकसित सभ्यता है

C. इतिहास में इसका नाम सर्वोपरि है

D. यहाँ विकास की तीन परतें मिली है

Answer: A

View Text Solution

9. निम्नलिखित गघांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - हरियाणा के पुरातत्व - विभव द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी इ सा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों

वर्ष पूर्व हो चुकी थी। अब तक यही मन जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिन्धुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गावँ में खुदाई और शोध का काम रुक - रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गावँ दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई हुई थी और तब इसे सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मन गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थी कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा। अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत है कि राखीगढ़ी, भारत - पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से

नियोजित इस शहर की सभी सड़कें मीटर चौड़ी थी। यह चौड़ाई कालीबंगन की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिन्ह मिले है, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके आलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ और एक भट्ठी के अवशेष भी मिले है। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फण्ड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत - स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया है, जो अवशेष मिले है, उनका समुचित अध्ययन सभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

पुरातत्व - विशेषज्ञ राखीगढ़ी में विशेष रूचि ले रहे है, क्योंकि

-

A. काफी प्राचीन और बड़ी सभ्यता हो सकती है

B. इसका समुचित अध्ययन शेष है

C. उत्खनन का कार्य अभी अधूरा है

D. इसके बारे में अभी - अभी पता लगा है

Answer: C

View Text Solution

10. निम्नलिखित गघांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए - हरियाणा के पुरातत्व - विभव द्वारा किए गए अब तक के शोध और खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हेक्टेयर में फैली यह राजधानी इ सा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व मौजूद थी। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। अब तक यही मन जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ही सिन्धुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। राखीगढ़ी गावँ में खुदाई और शोध का काम रुक - रुक कर चल रहा है। हिसार का यह गावँ दिल्ली से मात्र एक सौ पचास किलोमीटर की दूरी पर है। पहली बार यहाँ 1963 में खुदाई

हुई थी और तब इसे सिन्धु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर मन गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएँ की थी कि यहाँ दबे नगर, कभी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा रहा होगा। अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत है कि राखीगढ़ी, भारत - पाकिस्तान और अफगानिस्तान का आकार और आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। प्राप्त विवरणों के अनुसार समुचित रूप से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें मीटर चौड़ी थी। यह चौड़ाई कालीबंगन की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चाँदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिन्ह मिले है, जहाँ सम्भवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके आलावा टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएँ, ताँबे के बर्तन और कुछ प्रतिमाएँ

और एक भट्ठी के अवशेष भी मिले है। मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फण्ड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत - स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है। राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व विशिष्ट है। इस समय जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ बहुत से काम बकाया है, जो अवशेष मिले है, उनका समुचित अध्ययन सभी शेष है। उत्खनन का काम अब भी अधूरा है।

उपर्युक्त शीर्ष होगा -

A. राखीगढ़ी : एक सभ्यता की सम्भावना

B. सिन्धु - घाटी सभ्यता

C. विलुप्त सरस्वती की तलाश

D. एक विस्तृत शहर राखीगढ़ी

Answer: A

View Text Solution

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए

ओ देशवासियों बैठ न जाओं पत्थर से,

ओ देशवासियों रोओ मत तुम यों निर्झर से,

दरख्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से

वह सुनाता है

गमजदों और

रंजीदों की।

जब सार सरकता - सा लगता जग - जीवन से

अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से -

हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से

दुनिया ऊँचे आदर्शों की,

उम्मीदों की

साधना एक युग - युग अन्तर में ठनी रहे

यह भूमि बुद्ध - बापू से सूत की जनी रहे,

प्राथना एक योगियों, सन्तों

और शहीदों की।

'यह भूमि बुद्ध - बापू से सूत की जनी रहे' - का भाव है -

A. इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया

B. इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहे

C. यह धरती बुद्ध और बहु जैसी है

D. यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी

Answer:

Watch Video Solution

12. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए

ओ देशवासियों बैठ न जाओं पत्थर से,

ओ देशवासियों रोओ मत तुम यों निर्झर से,

दरख्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से

वह सुनाता है

गमजदों और

रंजीदों की।

जब सार सरकता - सा लगता जग - जीवन से

अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से -

हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से

दुनिया ऊँचे आदर्शों की,

उम्मीदों की

साधना एक युग - युग अन्तर में ठनी रहे

यह भूमि बुद्ध - बापू से सूत की जनी रहे,

प्राथना एक योगियों, सन्तों

और शहीदों की।

कवि क्या प्रार्थना करता है ?

A. योगी, सन्त और शहीदों का हम सब सम्मान करें

B. युगों - युगों तक यह धरती बनी रहे

C. धरती माँ का वन्दन करते रहें

D. भारतियों में योगी, सन्त और शहीद अवतार लेते रहेंगे

Answer:

Watch Video Solution

Outside Delhi Set I खण्ड ख

1. वे उन सब लोगों से मिले, जो मुझे जानते थे। (सरल वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

2. पंख वाले चींटे या दीमक वर्षा के दिनों में निकलते है। (वाक्य का भेद लिखिए)

View Text Solution

3. आषाढ़ की एक सुबह एक मोर ने मल्हार के मियाऊ - मियाऊ को सुर दिया था। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. फुरसत में मैना खूब रियाज करती है।

(कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. फख्ताओं द्वारा गीतों को सुर दिया जाता है।

(कर्तृवाच्य)

View Text Solution

6. बच्चा साँस नहीं ले पा रहा था।

(भाववाच्य में)

View Text Solution

7. दो - तीन पक्षियों द्वारा अपनी - अपनी लय में एक साथ कूदा जा रहा था।

(कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

8. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए -

_____ केवल भोजन करने के लिए जीवित नहीं रहता है, बल्कि

__ अपने भीतर की _____ इच्छाओं की तृप्ति भी ____ है।

View Text Solution

9. निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर उनमें निहित रस पहचानकर लिखिए -

(i) उपयुक्त उस खल को यद्यपि मृत्यु का भी दण्ड है,

पर मृत्यु से बढ़कर न जग में दण्ड और प्रचण्ड है।

अतएव कल उस नीच को रण - मध्य जो मरुँ न मैं,

तो सत्य कहता हूँ कभी शस्त्रास्त्र फिर धारूँ न मैं।

(ii) वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता

पथ पर आता

पेट पीठ दोनों मिलकर है एक,

चल रहा लकुटिया टेक

View Text Solution

10. निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर उनमें निहित रस पहचानकर लिखिए -

(i) श्रृंगार रस का स्थायी भाव लीखिए।

(ii) निम्नलिखित काव्यांश में स्थायी भाव क्या है ?

कब दवै दाँत दूध कै देखौं, कब तोतैं, मुख बचन झरैं।

कब नंदहिं बाबा कहि बोले,

कब जननी कहि मोहिं ररै।

View Text Solution

Outside Delhi Set I खण्ड ग

1. मन्नू भण्डारी ने अपनी माँ के बारे में क्या कहा है ?

View Text Solution

2. अन्तिम दिनों में मन्नू भण्डारी के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था, लेखिका ने इसका क्या कारण दिए ?

View Text Solution

3. बिस्मिल्ला खाँ को खुद के प्रति क्या विश्वास है ?

View Text Solution

4. काशी में अभी - भी क्या शेष बचा हुआ है ?

View Text Solution

5. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला

प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ

आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ

तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता

कहीं से चला जाता है संगतकार का स्वर

कभी - कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

'बैठने लगता है उसका गला' का क्या आशय है ?

View Text Solution

6. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला

प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ

आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ

तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता

कहीं से चला जाता है संगतकार का स्वर

कभी - कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

मुख्य गायक को ढाढ़स कौन बँधाता है और क्यों ?

View Text Solution

7. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला

प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ

आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ

तभी मुख्य गायक को ढाढ़स बँधाता

कहीं से चला जाता है संगतकार का स्वर

कभी - कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ

तार सप्तक क्या है ?

View Text Solution

8. 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को अपने चेहरे पर न रीझने की सलाह क्यों दी है ?

View Text Solution

9. माँ का कौन - सा दुःख प्रामाणिक था, कैसे ?

View Text Solution

10. 'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण' कथन में कवि की वेदना और चेतना कैसे व्यक्त हो रही है ?

View Text Solution

11. 'धनुष को तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए।

View Text Solution

12. काव्यांश के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

View Text Solution

13. 'आप चैन की नींद सो सकें इसलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे है' - एक फौजी के इस कथन पर जीवन - मूल्यों की दृष्टि से चर्चा कीजिए।

View Text Solution

Outside Delhi Set I खण्ड घ

1. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

विज्ञापन की दुनिया

• विज्ञापन का युग

• भ्रमजाल और जानकारी

• सामाजिक दायित्व।

View Text Solution

2. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

भ्रष्टाचार - मुक्त समाज

• भ्रष्टाचार क्या है ?

• सामाजिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार

• कारण और निवारण

View Text Solution

3. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

पी. वी. सिन्धु : मेरी प्रिय खिलाड़ी

- अभ्यास और परिश्रम
- जुझारूपन और आत्मविश्वास
- धैर्य और जीत का सेहरा।

View Text Solution

4. अपनी दादी की चित्र - प्रदर्शनी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हुए उन्हें बधाई - पत्र लिखिए।

View Text Solution

5. अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए प्राथमिक शिक्षक के पद के लिए अपने जिले के शिक्षा - अधिकारी को आवेदन - पत्र लिखिए।

View Text Solution

Outside Delhi Set Ii खण्ड ख

1. जब सावन - भादों आते है तब दर्जिनी की आवाज पुरे इलाके में गूँजती है।

(सरल वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

2. भुजंगा शाम को तार पर बैठकर पतिंगो को पकड़ता रहता है।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. अँधेरा होते - होते चौदह घण्टों बाद कूजन - कुंज का दिन खत्म हो जाता है।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. श्यामा सुबह - शाम के राग बखूबी गति है।

(कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. पक्षियों द्वारा संगीत का अभ्यास किया जाता है।

(कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

6. दर्द के कारण उससे चला नहीं जाता।

(कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

7. चोट के कारण वह बैठ नहीं सकती।

(भाववाच्य में)

View Text Solution

8. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए -

_____ व परमाणु - युग में सबसे ____ प्रश्न _____ ही है।

View Text Solution

9. (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन - सा स्थायी भाव है ?

सुत मुख देखि जसोदा फूली

हरषति देखि दूध की दँतिया, प्रेम मगन तन की सुधि भूली।

(ii) करूं रस का स्थायी भाव लिखिए।

View Text Solution

Outside Delhi Set Ii खण्ड घ

1. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

अनुशासित दिनचर्या

• जीवन में अनुशासन की अपेक्षा

• अनुशासित क्रियाकलाप का लाभ

• काम करें।

View Text Solution

2. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(ख) प्राकृतिक आपदा - भूकम्प

• प्राकृतिक आपदाएँ

• भूकम्प से नुकसान

• बचाव के उपाय

View Text Solution

3. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

ओलम्पिक और भारत

• ओलम्पिक खेल

• भरतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन

• सुधर के कदम

View Text Solution

4. हाल में देखे हुए किसी नाटक की समीक्षा करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

View Text Solution

5. विद्यालय में एक संगीत - सम्मेलन करने की अनुमति देने हेतु अपने प्रधानाचार्य से अनुरोध कीजिए।

View Text Solution

Outside Delhi Set Iii खण्ड ख

1. डलिया में आम है, दूसरे फलों के साथ आम रखे है।

(सरल वक्य बनाइए)

View Text Solution

2. शर्मीला पीलक पेड़ के पत्तों में छुपकर बोलता है।

(संयुक्त वाक्य बनाइए)

View Text Solution

3. पीलक जितना शर्मीला होता है उतनी ही इसकी आवाज भी शर्मीली है।

(वाक्य - भेद लिखिए)

View Text Solution

4. कुछ छोटे भूरे पक्षी मंच सँभाल लेते है। (कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. बुलबुल द्वारा रात्रि - विश्राम अमरुद की डाल पर किया जाता है। (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

6. तुम दिनभर कैसे बैठोगे ? (भाववाच्य में)

View Text Solution

7. सात सुरों को यह गजब की विविधता के साथ प्रस्तुत करती है। (कर्मवाच्य)

View Text Solution

8. निम्नलिखित रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए :

_____ इंसान बनाना अत्यन्त ही _____ है ____

असम्भव नहीं।

View Text Solution

9. (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन - सा स्थायी भाव है ?

बाहर तैं तब नन्द बुलाएं देखौं धौं सुन्दर सुखदाई।

तनक - तनक सी दोष दंतुलिया देखौं, नैन सफल करौं आई।

(ii) हास्य रस का स्थायी भाव लिखिए।

View Text Solution

10. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए :

स्वच्छता की ओर बढे कदम

- स्वछता की आवश्यकता
- स्वच्छता के प्रति जागरूकता
- नियम, कानून।

View Text Solution

11. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए :

आतंवाद

- बढ़ता आतंकवाद
- भारत में आतंकवाद
- विश्व - स्तर पर आतंकतवाद,

View Text Solution

12. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत - बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए :

एक मुलाकात महिला चैंपियन साक्षी मलिक से .....

- कैसे हुई भेंट
- हिम्मत और मेहनत,
- आपकी राय,

View Text Solution

13. अपने विद्यालय में हुए संगीत समारोह पर टिप्पणी करते हुए माँ को पत्र लिखिए।

View Text Solution

14. विधालयों में योग - शिक्षा का महत्व बताते हुए किसी समाचार - पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

View Text Solution

Delhi Set I खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए।

देश की आजादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके है और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतियों को जगाने की, पहले

नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे है। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे है। किसी भी लोकतान्त्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है। एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं बल्कि लोग देखें और समझे भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र

के अनिवार्य अंग है। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार - विचार ठीक न रहेगा। तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनितिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं क्र सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी राजनितिक नहीं बल्कि सामाजिक है। आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साड़ी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़

सकता।

लगभग 70 वर्ष की आजादी के बाद नागरिकों से लेखक की अपेक्षाएँ है कि वे :

A. समझदार हों

B. प्रश्न करने वाले हों

C. जगी हुई युवा पीढ़ी के हों

D. मजबूत सरकार चाहने वाले हों

Answer: C

View Text Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए।

देश की आजादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके है और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतियों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे है। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे है। किसी भी लोकतान्त्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है। एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट

नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं बल्कि लोग देखें और समझे भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग है। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार - विचार ठीक न रहेगा। तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनितिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं क्र सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी राजनितिक नहीं बल्कि सामाजिक है। आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं

जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साड़ी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

हमारे लोकतान्त्रिक देश में आभाव है :

A. सौहार्द्र का

B. सद्भावना का

C. जिम्मेदार नागरिकों का

D. एकमत पार्टी का

Answer: C

View Text Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए।

देश की आजादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके है और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतियों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे है। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे है। किसी भी

लोकतान्त्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है। एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं बल्कि लोग देखें और समझे भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग है। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार - विचार ठीक न रहेगा। तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनितिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं क्र सकता।

स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी राजनितिक नहीं बल्कि सामाजिक है। आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साड़ी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

किसी मंत्री की विशेषता होनी चाहिए :

A. देश की बागडोर संभालने वाला

B. मिलनसार और समझदार

C. सुशिक्षित और धनवान

D. ईमानदार और विश्वसनीय

Answer: D

View Text Solution

4. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए।

देश की आजादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके है और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतियों को जगाने की, पहले

नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे है। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे है। किसी भी लोकतान्त्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है। एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं बल्कि लोग देखें और समझे भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र

के अनिवार्य अंग है। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार - विचार ठीक न रहेगा। तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनितिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं क्र सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी राजनितिक नहीं बल्कि सामाजिक है। आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साड़ी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़

सकता।

किसी भी लोकतंत्र की सफलता निर्भर करती है :

A. लोगों में स्वयं ही नेतृत्व भावना हो

B. सत्ता पर पूरा विश्वास हो

C. देश और देशवासियों से प्यार हो

D. समाज सुधारकों पर भरोसा हो

Answer: A

View Text Solution

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए।

देश की आजादी के उनहत्तर वर्ष हो चुके है और आज जरूरत है अपने भीतर के तर्कप्रिय भारतियों को जगाने की, पहले नागरिक और फिर उपभोक्ता बनने की। हमारा लोकतंत्र इसलिए बचा है कि हम सवाल उठाते रहे है। लेकिन वह बेहतर इसलिए नहीं बन पाया क्योंकि एक नागरिक के रूप में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते रहे है। किसी भी लोकतान्त्रिक प्रणाली की सफलता जनता की जागरूकता पर ही निर्भर करती है। एक बहुत बड़े संविधान विशेषज्ञ के अनुसार किसी मंत्री का सबसे प्राथमिक, सबसे पहला जो गुण होना चाहिए वह यह कि वह ईमानदार हो और उसे भ्रष्ट

नहीं बनाया जा सके। इतना ही जरूरी नहीं बल्कि लोग देखें और समझे भी कि यह आदमी ईमानदार है। उन्हें उसकी ईमानदारी में विश्वास भी होना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर हमारे लोकतंत्र की समस्या मूलतः नैतिक समस्या है। संविधान, शासन प्रणाली, दल, निर्वाचन ये सब लोकतंत्र के अनिवार्य अंग है। पर जब तक लोगों में नैतिकता की भावना न रहेगी, लोगों का आचार - विचार ठीक न रहेगा। तब तक अच्छे से अच्छे संविधान और उत्तम राजनितिक प्रणाली के बावजूद लोकतंत्र ठीक से काम नहीं क्र सकता। स्पष्ट है कि लोकतंत्र की भावना को जगाने व संवर्द्धित करने के लिए आधार प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी राजनितिक नहीं बल्कि सामाजिक है। आजादी और लोकतंत्र के साथ जुड़े सपनों को साकार करना है, तो सबसे पहले जनता को स्वयं

जाग्रत होना होगा। जब तक स्वयं जनता का नेतृत्व पैदा नहीं होता, तब तक कोई भी लोकतंत्र सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। साड़ी दुनिया में एक भी देश का उदाहरण ऐसा नहीं मिलेगा जिसका उत्थान केवल राज्य की शक्ति द्वारा हुआ हो। कोई भी राज्य बिना लोगों की शक्ति के आगे नहीं बढ़ सकता।

लोकतंत्र की भावना को जगाना - बढ़ाना दायित्व है :

A. राजनितिक

B. प्रशासनिक

C. समाजिक

D. संवैधानिक

Answer: C

Watch Video Solution

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकप चुनकर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते है कि कर्म करे, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की उपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए

उसका जो जीवन बिता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न - कर्म के अनुसार उसके एक - एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला - लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो अनुनाद का उन्मेष होता रहता है यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोटा हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म -

ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच - सोच कर होता कि मैने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा द्विय आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते है। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

कर्म करने वाले को फल न मिलने पर भी पछतावा नहीं होता क्योंकि :

A. अन्तिम फल पहुँच से दूर होता है

B. प्रयत्न न करने का भी पश्चाताप नहीं होता

C. वह आनन्दपूर्वक काम करता रहता है

D. उसका जीवन संतुष्ट रूप से बीतता है

Answer: B

View Text Solution

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकप चुनकर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते है कि कर्म करे, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ

उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की उपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बिता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न - कर्म के अनुसार उसके एक - एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला - लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो अनुनाद का उन्मेष होता रहता है यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोटा हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना

अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म - ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच - सोच कर होता कि मैने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा द्विय आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते है। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

घर के बीमार सदस्य का उदाहरण क्यों दिया गया है ?

A. पारिवारिक कष्ट बताने के लिए

B. नया उपचार बताने के लिए

C. सुख और दुख की अवस्था के लिए

D. सेवा के संतोष के लिए

Answer: D

View Text Solution

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकप चुनकर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते है कि कर्म करे,

फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की उपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बिता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न - कर्म के अनुसार उसके एक - एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला - लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो अनुनाद का उन्मेष होता

रहता है यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोटा हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म - ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच - सोच कर होता कि मैने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा द्विय आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते है। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का

सच्चा सुख है।

'कर्मण्य' किसे कहा गया है ?

A. जो काम करता है

B. जो दूसरों से काम करवाता है

C. जो काम करने में आनन्द पाता है

D. जो उच्च और पवित्र कर्म करता है

Answer: C

Watch Video Solution

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकप चुनकर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते है कि कर्म करे, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की उपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बिता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न - कर्म के अनुसार उसके एक - एक

अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला - लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो अनुनाद का उन्मेष होता रहता है यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोटा हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म - ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच - सोच कर होता कि मैने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा द्विय

आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते है। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

कर्मवीर का सुख किसे मन गया है ?

A. अत्याचार का दमन

B. कर्म करते रहना

C. कर्म करने से प्राप्त संतोष

D. फल के प्रति तिरस्कार भावना

Answer: C

View Text Solution

View Text Solution

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकप चुनकर लिखिए -

गीता के इस उपदेश की लोग प्रायः चर्चा करते है कि कर्म करे, फल की इच्छा न करें। यह कहना तो सरल है पर पालन उतना सरल नहीं। कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की उपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बिता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि

मैने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न - कर्म के अनुसार उसके एक - एक अंग की योजना होती है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला - लाकर रोगी को देता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ जो अनुनाद का उन्मेष होता रहता है यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोटा हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्म - ग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच - सोच कर होता कि मैने पूरा प्रयत्न नहीं किया। कर्म

में आनन्द अनुभव करने वालों का नाम ही कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा द्विय आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते है। अत्याचार का दमन और शमन करते हुए कर्म करने से चित में जो तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है।

गीता के किस उपदेश की ओर संकेत है :

A. कर्म करें तो फल मिलेगा

B. कर्म की बात करना सरल है

C. कर्म करने से संतोष होता है

D. कर्म करें फल की चिंता नहीं

Answer: D

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए -

सुख रहा है समय

इसके हिस्से की रेत

उड़ रही है आसमान में

सुख रहा है

आँगन में रखा पानी का गिलास

पँखुरी की साँस सुख रही है

जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी

उससे अब हाँफने की आवाज आती है

हर पौधा सुख रहा है

हर नदी इतिहास हो रही है

हर तालाब का सिमट रहा है कोना

यही एक मनुष्य का कंठ सुख रहा है

वह जेब से निकालता है पैसे और

खरीब रहा है बोलता बंद पानी

बाकि जिव क्या करेंगे अब

न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में व्यंग्य है :

A. जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते

B. जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं है

C. जीव निराश और हताश बैठे है

D. जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही

Answer:

Watch Video Solution

Delhi Set I खण्ड ख

1. जीवन की कुछ चीजें है जिन्हें हम कोशिश करके पा सकते है।

(आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

View Text Solution

2. मोहनदास और गोकुलदास सामान निकलकर बाहर रखते जाते थे।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. हमें स्वयं करना पड़ा और पसीने छूट गए।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. कूजन कुंज में आसपास के पक्षी संगीत का अभ्यास करते है। (कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. श्यामा द्वारा सुबह - दोपहर के राग बखूबी गाए जाते है। (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

6. दर्द के कारण वह चल नहीं सकती। (भाववाच्य में)

View Text Solution

7. श्यामा के गीत की तुलना बुलबुल के सुगम संगीत के सी जाती है। (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

8. रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए -

_____ ने _____ खेती की _____ अपनी पुस्तकों

में ____ ।

View Text Solution

9. काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए -

(i) साक्षी रहे संसार करता हूँ परिज्ञा पार्थ मैं,

पूरा करूँगा कार्य सब कथनानुसार यथार्थ में।

जो एक बालक को कपट से मार हँसते है अभी,

वे शत्रु सत्वर शोक - सागर - मग्न दीखेंगे सभी।

(ii) साथ दो बच्चे भी है सदा हाथ फैलाए,

बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दय दृष्टि - पाने की ओर बढ़ाए।

View Text Solution

10. (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन - सा स्थायी भाव है ?

मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहै न आनि सुवावै

तू काहै नाहिं बेगहिं आवै, तोको कान्ह बुलावै

(ii) शृंगार रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए।

View Text Solution

Delhi Set I खण्ड ग

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के है उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्रकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्रकृत न थी ? सबूत तो प्रकृत के चलने के ही मिलते है। प्रकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शक्य मुनि तथा उनके चेले प्रकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते ? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रन्ध की रचना प्रकृत में किये जोन का एकमात्र कारण यही है कि

उस जमाने में प्रकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्रकृत बोलने और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिन्ह नहीं।

नाटककारों के समय में प्रकृत ही प्रचलित भाषा थी - लेखक ने इस संबंध में क्या तर्क दिए है ? दो का उल्लेख कीजिए।

View Text Solution

2. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के है उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता

था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्रकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्रकृत न थी ? सबूत तो प्रकृत के चलने के ही मिलते है। प्रकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शक्य मुनि तथा उनके चेले प्रकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते ? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रन्ध की रचना प्रकृत में किये जोन का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्रकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्रकृत बोलने और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिन्ह नहीं।

प्राकृत बोलने वाले को अपढ़ बताना अनुचित क्यों है ?

View Text Solution

3. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के है उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्रकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे। इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्रकृत न थी ? सबूत तो प्रकृत के चलने के ही मिलते है। प्रकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान शक्य मुनि तथा उनके चेले प्रकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते ? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रन्ध

की रचना प्रकृत में किये जोन का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्रकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्रकृत बोलने और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिन्ह नहीं।

भवभूति - कालिदास कौन थे ?

View Text Solution

4. मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की क्या जानकारी दी ?

View Text Solution

5. मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहनशक्ति में धनरति से कुछ ज्यादा ही थी - ऐसा क्यों कहा गया ?

View Text Solution

6. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर का कौन - सा रास्ता प्रिय था और क्यों ?

View Text Solution

7. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में

खो चूका होता है

या अपनी ही सरगम को लाँघकर

चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में

तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है

जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन

जब वह नौसिखिया था।

'वह अपनी गूँज मिलता आया है प्राचीन काल से' का भाव स्पष्ट कीजिए।

View Text Solution

8. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में

खो चूका होता है

या अपनी ही सरगम को लाँघकर

चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में

तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है

जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन

जब वह नौसिखिया था।

मुख्य गायक के अंतरे की जटिल - तान में खो जाने पर संगतकार क्या करता है ?

View Text Solution

9. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में

खो चूका होता है

या अपनी ही सरगम को लाँघकर

चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में

तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है

जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन

जब वह नौसिखिया था।

संगतकार, मुख्य गायक को क्या याद दिलाता है ?

View Text Solution

10. 'लड़की जैसी दिखाई मत देना' यह आचरण अब बदलने लगा है - इस पर अपने विचार लिखिए।

View Text Solution

11. बेटी को 'अंतिम पूँजी' क्यों कहा गया है ?

View Text Solution

12. 'दुविधा - हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं' कथन में किस यथार्थ का चित्रण है ?

View Text Solution

13. 'बहु धनुही तोरी लरिकाईं' - यह किसने कहा और क्यों ?

View Text Solution

14. लक्षण ने शूरवीरों के क्या गुण बताए है ?

View Text Solution

15. जल - संरक्षण से आप क्या समझते है ? हमे जल - संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार ? जीवन मूल्यों की दृष्टि से जल - संरक्षण पर चर्चा कीजिए।

View Text Solution

16. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

- सजावट और उत्साह
- कार्यक्रम का सुखद आनन्द
- प्रेरणा

View Text Solution

17. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

वन और पर्यावरण

- वन अमूल्य वरदान
- मानव से संबंध
- पर्यावरण के समाधान

View Text Solution

18. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

मिडिया की भूमिका

- मीडिया का प्रभाव

• सकारात्मकता और नकारात्मकता

• अपेक्षाएँ

View Text Solution

19. पी. वी. सिंधु को पत्र लिखकर रियो ओलंपिक में उसके शानदार खेल के लिए बधाई दीजिए और उनके खेल के बारे में अपनी राय लिखिए।

View Text Solution

20. अपने क्षेत्र में जल - भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

View Text Solution

Delhi Set Ii खण्ड ख

1. कभी ऐसा वक्त भी आएगा जब हमारा देश विश्वशक्ति होगा। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

View Text Solution

2. घर से दूर होने के कारण वे उदास थे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. जब बच्चे उतावले हो रहे थे तब कस्तूरबा की आशंकाएँ भीतर उसे खरोंच रही थी। (सरल वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. बुलबुल रात्रि विश्राम अमरुद के डाल पर करती है। (कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. कुछ छोटे भूरे पक्षियों द्वारा मंच सँभाल लिया जाता है। (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

6. वह रात भर कैसे जागेगी। (भाववाच्य में)

View Text Solution

7. सात सुरों को इसने गजब की विविधता के साथ प्रस्तुत किया। (कर्मवाच्य में)

View Text Solution

8. रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए -

_____ वह सब कुछ है जो ___ समझ रखा है _____ इससे भी ___ ज्यादा है।

View Text Solution

9. (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन - सा स्थायी भाव है ?

कबहुँ पलक हरि मूँद लेत है, कबहुँ अधर फलकावै

सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि, करि करि सैन बतावै

इहि अंतर अकुलाई उठे हरि, जसुमति मधुर गावै।

(ii) वीर रस का स्थायी भाव लिखिए।

View Text Solution

10. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

जैसी संगति वैसा स्वभाव

• सदगुणों का विकास

• कुसंग से बचाव

• कैसे करें

View Text Solution

11. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

खेल और स्वास्थ्य

• खेलों की उपयोगिता

• खेल और स्वास्थ्य का संबंध

• हमारा कर्त्तव्य

View Text Solution

12. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

हमारे पड़ोसी

- पड़ोसियों का महत्त्व
- हमारा पड़ोसी
- विशेष बातें

View Text Solution

13. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिये कि ग्रीष्मावकाश में विद्यालय में रंगमंच प्रशिक्षण के लिए एक कार्यशाला राष्ट्रिय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित की जाए। इसकी उपयोगिता भी लिखिए।

View Text Solution

14. अपने चाचाजी को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिये कि वे आपके पिताजी को इस बात के लिए समझाकर राजी करें कि आपको बाढ़ - पीड़ितों की सहायता के लिए गठित स्वयंसेवकों के साथ जाने के लिए सहमत हों।

View Text Solution

Delhi Set Iii खण्ड ख

1. मैंने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के अभावग्रस्त जीवन के बारे में मैं सब जानती हूँ। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

View Text Solution

2. सीधा सादा किसान सुभाष पालेकर अपनी नेचुरल फार्मिंग में कृषि के क्षेत्र में क्रांति ला रहा है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

3. अपने उत्पाद को सीधे ग्राहक को बेचने के कारण किसान को दुगनी कीमत मिलती है। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

View Text Solution

4. मैनाओं ने गीत सुनाया (कर्मवाच्य में)

View Text Solution

5. माँ अभी भी खड़ी नहीं हो पाती। (भाववाच्य में)

View Text Solution

6. बीमारी के कारण उससे उठा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

7. क्या अब चला जाए ? (कर्तृवाच्य में)

View Text Solution

8. रेखांकित पदों का पद - परिचय दीजिए -

_____ तभी है जब वह युद्ध से शांति की ओर आगे बढ़े।

View Text Solution

9. (i) निम्नलिखित काव्यांश में कौन - सा स्थायी भाव है ?

जसुमति मन अभिलाष करै

कब मेरो लाल घुटुरुवनि रैंगे, कब धरती पग दुवेक धरै।

(ii) करूं रस का स्थायी भाव लिखिए।

View Text Solution

10. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

हम होंगे कामयाब

- कामयाबी का अर्थ
- कर्मठ व्यक्ति
- आत्मविश्वासी और दृढ़निश्चय

View Text Solution

11. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

शिक्षा - व्यवस्था

• वर्तमान शिक्षा प्रणाली

• सुधार अपेक्षित

• वांछनीय शिक्षा व्यवस्था

View Text Solution

12. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए -

स्मार्ट फोन

• स्मार्ट फोन की सुविधा

• मोबाईल संपत्ति और विपत्ति दोनों रूप में

• स्वास्थ्य पट पड़ता प्रभाव

View Text Solution

13. अपनी बहन को पत्र लिखकर योगासन करने के लिए प्रेरित कीजिए।

View Text Solution

14. किसी महिला के साथ बीएस में हुए अभद्र व्यवहार को रोकने में बीएस कंडक्टर के साहस और कर्तव्यपरायणता की प्रशंसा करते हुए परिवहन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखिए।

View Text Solution